शब्द–ब्रह्म
E - ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'रागदरबारी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन

प्रमिला बड़ौले (शोधार्थी)
डॉ. शहजात कुरेशी
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययन शाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी उपन्यास की मौलिक उद्भावना है-आँचलिक उपन्यास। जिसमें किसी विशेष प्रदेश या अँचल को लेकर जन-जीवन का यथार्थ एवं सर्वांगीण चित्र प्रस्तुत किया जाता है। वैसे तो प्रत्येक उपन्यास में पृष्ठभूमि के रुप में संबंधित देश, काल और परिस्थिति का चित्रण रहता हैं , ताकि उसके कथानक की विभिन्न घटनाओं को पात्र और उनके चरित्र विकास को सही परिवेश में देखा समझा जा सके। पर जिसे 'आँचलिक उपन्यास' कहा जाता है, उसमें देश, काल, प्रकृति और परिस्थिति का चित्रण पृष्ठभूमि बनकर , उपन्यास के तत्वों के पोषक बनकर, साधन के रुप में नहीं, बल्कि साध्य के रुप में होता है।"1 इसका तात्पर्य है कि उपन्यास यथार्थ जीवन का चित्र है। किसी विशेष परिवेश या अँचल का वातावरण उसे आँचलिकता प्रदान करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी' उपन्यास में ग्रामीण जीवन की चर्चा की गयी है

प्रस्तावना

श्रीलाल शुक्ल का उपन्यास साहित्य में तटस्थ और उद्देश्यपूर्ण व्यंग्य के लिए विख्यात हैं। वे साहित्य और प्रशासन दोनों के प्रति गहन निष्ठावान हैं तथा साथ ही दोनों के समर्पित और दोनों की ही खामियों , खूबियों के गहरे जानकार हैं, अपने प्रशासनिक सेवाकाल में वे अनेक सुख-दुःख की स्थितियों से गुजरे किन्तु सुख या दुःख के प्रति उनकी दृष्टि सदैव सृजनपरक रही। गहरे अनुभवों से सम्पन्न होकर उन्होंने देश, समाज, शासन, प्रशासन आदि की वास्तविकताओं तथा विसंगतियों की सच्चाई के साथ प्रकट किया हैं।

रागदरबारी में ग्रामीण जीवन

श्रीलाल शुक्ल कृत 'रागदरबारी' (1968) सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है , जिसमें स्वतंत्र भारत के ग्रामीण जीवन की मूल्यहीनता को परत-दर-परत उजागर किया है। इसके बारे में स्वयं लेखक ने कहा है- "रागदरबारी का संबंध एक बड़े नगर से कुछ दूर बसे हुए गाँव की जिन्दगी से है जो आजादी के बाद की प्रगति और विकास के नारों के बावजूद निहित स्वार्थी और अनेक अवांछनीय तत्वों के सामने घिसट रही हैं।"2 यह उसी शिवपालगंज की जिन्दगी का दस्तावेज हैं।

इस रागदरबारी ' उपन्यास में उत्तरप्रदेश के पूर्वांचल के एक कस्बेनुमा गाँव 'शिवपालगंज' की कहानी है। यह उस गाँव की जिन्दगी का दस्तावेज है जो स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ग्राम विकास और गरीबी हटाओ के आकर्षक नारों के बावजूद पिछड़ा क्षेत्र हैं। आजादी मिलने के दो दशक बाद भी उत्तरप्रदेश और बिहार के गाँव सभी दृष्टियों से अविकसित और पिछड़े तो रहे ही साथ ही उनके सामाजिक और सांस्कृतिक

जीवन में मूल्यों की भयावह गिरावट आयी।

मूल्यपतन के कारण राजनीतिक , सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक जीवन प्रदूषित हुआ। आँचलिक पिछड़ेपन के फलस्वरुप चतुर बाहुबलियों ने सामान्य जन पर अधिकार मान लिया।

आजादी मिलने के बाद राजनीति की गंदगी गाँवों में भी पहुँच गयी। पंचायतों , ग्रामसभाओं, सहयोग समितियों और स्कूलों-कॉलेजों की प्रबंध समितियों के चुनावों में वे सभी हथकंडे और घृणित उपाय काम में लाये जाने लगे, जो विधान सभा या संसद के चुनावों में लाये जाते थे। चोरी-डकैती, शोहदागीरी, गबन, भ्रष्टाचार आदि के मामलों में गाँव शहरों से होड़ लेने लगे। उपन्यास का शिवपालगंज एक ऐसा कस्बानुमा गाँव हैं , सहयोग समिति है और एक भट्ठी भी है। इस गाँव के बेताब बाद शाह वैद्यजी हैं जो कथाकार के अनुसार-"अंग्रेजों के जमाने में अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखाते थे।"3

लेखक ने बहुत ही सहज भाव से ग्रामीण जीवन में घटने वाली राजनीति के प्रत्येक पहलु को यथार्थ रूप हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

वैद्यजी के चमचे सनीचर , प्रिंसिपल, बद्री पहलवान, रुप्पन, रंगनाथ, जोगनाथ, लंगड़, खन्ना मास्टर आदि की तरह देश में चमचों की संख्या कम नहीं। ये अपनी ही स्वार्थ सिद्धि के कारण सच्चे नेता लोगों को पद से हटने नहीं देते जैसे - "वैद्यजी को को-ऑपरेटिव और कॉलेज के मामले में मजबूत कर दिया और उन्होंने मजबूत होना स्वीकार कर लिया था।"4

गाँव के सर्वेसर्वा वैद्यजी का चमचा शनीचर वैद्यजी के नाम से अपने लिए वोट माँगता है तो इक्के वाले कहते हैं- "जब वैद्यजी वोट की भीख माँग रहे तो मना कौन कर सकता है। हमें कौन सा वोट का अचार डालना है, ले जाएँ। वैद्यजी ही ले जाएँ। "5 इसी समझदारी के भाव तथा निष्क्रियता के कारण समाज में सुधार की संभावना घटती जा रही है। कोई भी किसी भी समस्या को सुलझाने की जिम्मेदारी नहीं लेना चाहता।

वैद्यजी पहले तो ग्राम सभा के प्रधान को हिकारत की दृष्टि से देखते थे , पर अचानक उनकी दृष्टि से देखते थे , पर अचानक उनकी दृष्टि में बदलाव आता है तथा पंचायत तो है ही नहीं, बस फिर क्या था , अपनी योजना को क्रियान्वित करने के लिए अपने चमचे सनीचर को ग्राम प्रधान के लिए खड़ा कर देते हैं। वह तो सनीचर जैसे लोगों के माध्यम से अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं।

'रागदरबारी' में ग्रामीण जीवन के सामाजिक मूल्यों के अवमूल्यन की स्थिति में पहुँचने की सच्चाई का बेबाक चित्रण किया गया है। साथ ही नैतिक स्थितियों का आलेखन उपन्यास में बड़ा ही जीवन्त बन पड़ा हैं। इसमें लेखक ने शिवपालगंज की ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारत की समाज व्यवस्था पर तीव्र व्यंग्य किया है।

वर्तमान ग्रामीण समाज अपनी विडम्बनाओं को ही नियति मानकर गति शील हैं। अन्य विसंगतियों के बावजूद वहाँ बद्री , गुरु और छोटे पहलवान जैसे चेले हैं , जो अपने पिता की ही पिटाई कर देते हैं और गलियों के बीच कहते हैं- "कोई हमने इस्टाम्प लगाकर दरखास्त दी थी कि हमें पैदा करो। चले साले कहीं के पैदा करने वाले।"6

'रागदरबारी' की सम्पूर्ण कथा का भाव गवाह है , रंगनाथ, जो शहर में पढ़ता है और कुछ दिनों के लिए गाँव आया हुआ है। कथा के केन्द्र में एक वैद्यजी है, जिनकी हैसियत एक जमींदार जैसी

है।उनके आदमी से थानेदार भी दबता है और वे सहकारी समिति , पंचायत व कॉलेज की प्रबंध समिति तक में अपने छल-बल के प्रयोग के लिए जाने जाते हैं। इस गाँव में कुछ और लोग भी है, जैसे शायर भीखम खेड़वी, बेटे से पिटते रहने वाले कुसहर प्रसाद, वैद्यजी के बेटे , उनका चमचा या सेवक सनीचर , प्रिंसिपल और कुछ अध्यापक। कुल मिलाकर यह रचना समाज में व्याप्त भ्रष्टता का दस्तावेज हैं।

निष्कर्ष

उपन्यास की दृष्टि से हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर युग अपने आप में एक उपलब्धि रहा है , जिसमें 'रागदरबारी' का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है। गोदान के बाद इसे भी उपन्यास जगत में मील का पत्थर माना जाता है। उपन्यास में सम्पूर्ण गतिविधियाँ शिवपालगंज में घटित होती है और इतने बड़े स्वरूप को एक छोटे से गाँव में एकत्रित करना मामूली बात नहीं। सहकारी संस्थानों, विद्यालयों, अदालतों आदि में निरन्तर परिव्याप्त भ्रष्टाचार का बखान कर व्यक्ति को उसकी मनुष्यता की संज्ञा को ही बदलने को यह उपन्यास मजबूर करता है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *हिन्दी उपन्यास, सम्पादक : सुषमा प्रिय दर्शी, पृष्ठ 190*
2. *रागदरबारी : प्रस्तावना - श्रीलाल शुक्ल, पृष्ठ 02*
3. *हिन्दी उपन्यास का इतिहास - गोपालराय, पृष्ठ 260*
4. *रागदरबारी - श्रीलाल शुक्ल , आठवाँ संस्करण - 1999, पृष्ठ 42*
5. *वही, पृष्ठ 197*
6. *वही, पृष्ठ 123*